**एच.डी. 2967 :** इस प्रजाति 95–100 सेमी. बालियां सफेद व दाना छोटा होता है। फसल का समय 130–135 दिन उपज 55–60 कुन्तल प्रति हैक्टेयर होती है। बोवाई का समय नवम्बर के प्रथम व अन्तिम पखबाड़ा है।

**पी0 बी0 डब्लू 343 :** यह प्रजाति समय से सिंचित दशाओं में बोने के लिए अति उत्तम है। प्रजाति भूरी–पीली तथा काली, गेरूई के लिये प्रतिरोधी है। बालियाँ सफेद होती हैं। बालियां सफेद पकने में 130–135 दिन लेती हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के मैदान भागों में तथा बिहार राज्य में भी बोने के लिए उपयुक्त पायी गयी है। उपज क्षमता 55 से 60 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

**पी0 बी0 डब्लू0 502 :** यह प्रजाति समय से सिंचित दशाओं में बोने के लिये उपयुक्त है। बालियां सफेद हैं। पकने में 130–135 दिन लेती है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के मैदान भागों में तथा झारखण्ड,बिहार राज्य में भी बोने के लए उपर्युक्त पायी गयी है। उपज क्षमता 50 से 55 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

**पी.बी.डब्ल्यू – 826 :** यह प्रजाति लगभग 140 से 150 दिनों के बाद परिपक्व होती है तथा इसकी औसत उपज 55 से 60 कु0 प्रति हैक्टेयर है। पौधे की औसतन ऊँचाई 100 सेमी तक रहती है। यह प्रजाति पीला रतुआ और भूरा रतुआ के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। इसके दाने चमकदार व मोटे होते हैं यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, जम्मू और हिमांचल प्रदेश के मैदानी इलाकों हेतु उपयुक्त है।

**डी.बी.डब्ल्यू – 327 (करण शिवानी) :** यह प्रजाति सूखे के प्रति सहनशील है तथा उच्च तापमान में भी अच्छी उपज प्रदान करती है। यह प्रजाति 155 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत ऊँचाई 98 सेमी होती है तथा उत्पादन क्षमता लगभग 75–80 कु0 प्रति हैक्टेयर तक रहती है। यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमांचल प्रदेश व उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।

**पी0 बी0 डब्लू 154 :** यह प्रजाति एक जीन बौनी है बालियाँ भूरे रंग की होती है। गेरूई रोग के लिये प्रतिरोधी है। पकने में 130–135 दिन लेती है। सिंचित दशाओं में समय से बोने के लिए उत्तराखण्ड के मैदानी भागों उ0प्र0, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, पूर्वी राजस्थान एवं बिहार के लिए उपयुक्त है। इसकी उपज क्षमता 50 से 55 कुन्तल/हेक्टेयर होती है।

**एच0 डी0 3086:** यह प्रजाति समय से सिंचित दशाओं में बोने के लिए अति उत्तम है। प्रजाति भूरी–पीली तथा काली, गेरूई के लिये प्रतिरोधी है। बालियाँ सफेद होती हैं। बालियां सफेद पकने में 130–135 दिन लेती हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के मैदान भागों में तथा बिहार राज्य में भी बोने के लिए उपयुक्त पायी गयी है। उपज क्षमता 55 से 60 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

**पी.बी.डब्लू 373 :** इस प्रजाति के पौधे 90–95 सेमी0 हेक्टेयर ऊंचे तथा पकने में 130 से 135 दिन का समय लेती है। यह प्रजाति गैरूई रोग के लिये प्रतिरोधी है। इस प्रजाति की उपज 55 से 60 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है। यह उत्तराखण्ड के मैदान भागों पंजाब, उ0प्र0, हरियाणा एवं बिहार की सिंचित दशाओं में बोने के लिए उपयुक्त पायी गयी है।

**डी.बी.डब्लू 187 (करन–वंदना):** यह प्रजाति एक जीन बौनी है। इसके पकने का समय 120–125 दिन का है। बालियां सफेद, दाना सरबती, कठोर एवं छोटा है। देर से सिंचित दशाओं में बोने के लिए उपयुक्त है। इस प्रजाति की औसत उपज क्षमता 55 से 60 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है। इस प्रजाति का 125 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीज प्रयोग में लाये जाने पर अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है।

**पी0बी0डब्लू 226 :** यह प्रजाति क जीन बौनी है जो कि 120 से 125 दिन में पककर तैयार होती है। सफेद बालियां वाली दाना सरबती, देरे से बोने के लिए उपयुक्त है। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब व राजस्थान में बोने के लिए उपयुक्त है। उपज क्षमता 40 से 45 कुन्तल/हेक्टेयर होती है।

**पी.बी.डब्लू 550 :** यह प्रजाति एक जीन बौनी है जो कि 120 से 125 दिन में पककर तैयार होती है। बालियं भूरे रंग की होती है। दाना शरबती कठोर व लम्बा होता है। सिंचित दशाओं में देर से बोने के लिए पूरे भारत में उपयुक्त है। इस प्रजाति में गेरूई रोग का प्रकोप होता है। उपज क्षमता 50 से 55 कुन्तल/हेक्टेयर होती है।

**के. 7903 (हलना) :** इस प्रजाति एक जीन बौनी है। जो कि 110–120 दिन में पककर तैयार

होती है। इस प्रजाति के पौधे 90–95 सेमी. लम्बे होते हैं। इस प्रजाति की उपज 40–45 कुन्तल प्रति हैक्ट्रेयर है। यह उत्तराखण्ड के मैदान भागों पंजाब, उ0प्र0, हरियाणा एवं बिहार की सिंचित दशाओं में बोने के लिए उपयुक्त पायी गयी है।

**डब्लू एच 711 :** यह प्रजाति 100–105 सेमी. तक बढ़ती है। बालियों सफेद दाना शरबती, गोल व चमकदार होता है। फसल का समय 125 से 130 दिन, उपज 45 से 50 कुन्तल प्रति हैक्टेयर होती है। बोवाई का समय नवम्बर के द्वितीय पखवाड़े से दिसम्बर के प्रथम पखवाड़े तक।

**एच.डी. 3226 :** इस प्रजाति को सिंचित समय में बोया जा सकता है। यह प्रजाति उत्तर प्रदेश मैदानी क्षेत्रों पंजाब, हरियाण, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभाग को छोड़कर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जम्मू कश्मीर हिमांचल और उत्तराखण्ड में बोई जा सकती है। यह प्रजाति कीटनाशक प्रतिरोधी है। इसकी उपज क्षमता 55–60 कुं0 प्रति हैक्टेयर है।

**डी. बी. डब्ल्यू – 303 (करन वैष्णवी)**

यह प्रजाति अगेती बुवाई हेतु उपयुक्त है। बुवाई का समय अक्टूबर चौथे सप्ताह से नवम्बर द्वितीय सप्ताह तक उपयुक्त है। पौधे की ऊँचाई 101 से0मी0 तक रहती है। यह प्रजाति पीले तथा भूरे रतुआ रोग के लिये प्रतिरोधी है। इसकी औसत उपज 55 से 60 कु0 प्रति हैक्टेयर है। यह प्रजाति समयानुसार बुवाई के साथ प0 उत्तरी मैदानी क्षेत्रों पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हिमांचल, उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्रों के लिये उपयुक्त है।

**डी. बी. डब्ल्यू – 222 (करन नरेन्द्रा)**

यह प्रजाति अक्टूबर के चौथे सप्ताह से नवम्बर के चौथे सप्ताह तक बुवाई हेतु उपयुक्त है तथा यह फसल लगभग 143 दिनों में काटने के लिये तैयार हो जाती है। पौधे की ऊँचाई 100–105 से0मी0 व औसतन उपज लगभग 55–60 कु0 प्रति हैक्ट्रेयर तक रहती है। यह प्रजाति पीले तथा भूरे रतुआ रोग के लिये प्रतिरोधी है। यह प्रजाति पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, जम्मू कश्मीर, हिमांचल प्रदेश के ऊना व उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों हेतु उपयुक्त है।

**खेत की तैयारी :–**

गेहूँ सामान्यतः सिंचित क्षेत्रों में मक्का, वाजरा, ज्वार एवं सोयाबीन आदि फसलों के बाद बोया जाता है। पिछली फसलों की कटाई के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से एक जुताई कर दे। इसके बाद हैरों या बैल से चलने वाला उपकरण 2 या 3 बार चला देना चाहिए। बोआई के लिए तैयार खेती में ढेल तथा खरपतवार नहीं होना चाहिए। बीजों के अच्छे अनुकरण के लिए बोआई 7–10 दिन पहले एक सिंचाई करना जरूरी है। यदि गन्ने धान या लाही के बाद गेहूँ बोया जाये तो यह फसलें कटने से पहले ही गेहूँ के लिये सिंचाई कर देनी चाहिए। जिससे काटने के तुरंत बाद खेत तैयार करके गेहूँ की बोआई शीघ्र की जा सके। बोआई से पहले खेत में एक हल्की जुताई करके उसे समतल कर लेना चाहिए। छोटे पौधों को दीमक गुजिया और मिट्टी के अन्य कीड़ों से बचाने के लिए भूमि में अंतिम जुताई के समय एलिड्रन 5 प्रतिशत 15 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला दें।

**उर्वरक नाईट्रोजन –**

अधिकतम अधिक लाभ पाने के लिए 120 किलोग्राम नाईट्रोजन प्रति हैक्टेयर इस्तेमाल करना चाहिए। यदि गेहूँ दलहन व हरी घास वाली फसलों के बाद भूमि में बोया जाये तो नाईट्रोजन की मात्रा 80 किग्रा0 प्रति हैक्टेयर की दर से देनी चाहिए। दोमट भूमियों में 1/2 मात्रा बोआई के समय 1/2 प्रथम सिंचाई पर देना लाभकर पाया गया है।

**फास्फोरस और पोटाश –**

फास्फोरस और पोटाश की मात्रा की जांच के आधार पर डालनी चाहिए। मिट्टी की जांच न कराई गई हो तो खेत में 60 किग्राम फास्फोरस तथ 40 किग्रा0 पोटाश प्रति हैक्टेयर के हिसाब से डालना चाहिए। यदि सम्भव हो तो फर्टीसीड ग्रिल की मदद से नत्रजन की आधी मात्रा सम्पूर्ण फास्फोरस तथा पोटाश की मात्रा इस प्रकार डालनी चाहिए कि वह बीज से 3 सेमी0 नीचे तथा बगलें में रहें। यदि मशीन से पहले उर्वरक का मिश्रण खेत में सामान रूप से फैलाकर 10–12 सेमी0 गहराई तक मिला दीजिए। खाद और बीज को एक साथ नहीं मिलाना चाहिए।

**बीज की मात्रा**

100 किग्रा. प्रति हैक्टेयर के हिसाब से बीज डालना ठीक रहता है। 15 दिसम्बर के बाद बोई जाने वाली

फसल के लिए बीज को अधिक मात्रा (125 किग्रा. प्रति हैक्टेयर) में डालना चाहिए, यदि बीज उपचारित न हो तो उसे थायरम के (0.25 प्रतिशत के दर से) उपचारित कर लेना चाहिए या बीजों के शोधन कार्बेन्डाजिम की 2.5 ग्रा./कि.ग्रा. की दर से करें।

**बीज बोने की विधि तथा गहराई –** बीज की बोआई विधि उपलब्ध यन्त्रों पर निर्भर करती है। आमतौर से बोआई 20 से 22 सेमी. की कतारों में करनी चाहिए। खेत में समान अंकुरण के लिए नम भूमि में बीज बोना चाहिए। जिससे ज्यादा से ज्यादा संख्या में और समान रूप से अंकुरण फूटे। बोआई के बाद स्थानीय अनुभव के आधार पर आवश्यकता पड़े तो खेत में पाटा चलाया जा सकता है।

**सिंचाई :–** सिचाई की कुल संख्या भूमि पर की किस्म एवं शीतकालीन वर्षा व हर सिंचाई पर दी गई पानी की मात्रा पर निर्भर करती है। वैसे कुल पांच सिंचाई विभिन्न समयों पर करनी चाहिए।

| | |
|---|---|
| पहली सिंचाई :– | शिखर जड़ प्रारम्भ होने पर (बोने से 20–25 दिन पर परंतु 25–30 दिन पर देर से बोई गई फसलों में) |
| दूसरी सिंचाई | कल्ले फूटने के समय अथवा बोआई से 40–45 दिन पर। |
| तीसरी सिंचाई | गांठ बनने की अंतिम अवस्था बोआई से 60–65 दिन पर। |
| चौथी सिंचाई | फूल आने के समय अथवा 80–85 दिन पर। |
| पांचवी सिंचाई | दाने में दूध पड़ने के समय अथवा 100–105 दिन पर। |

दानों में दूध पड़ने के समय सिचाई उस दिन करनी चाहिए जब आसमान साफ हो। आँधी–अंधड़ न हो। बलुई मिट्टी में एक से अधिक सिंचाई की आवश्यकता पड़ सकती है।

**खरपतवारों का रासायनिक नियंत्रण :–** चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों का नष्ट करने के लिए 500 ग्राम सकिय 2–4 डी प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करें। 2–4 डी की उचित मात्रा समय से बोने के 35 दिन बाद और पछाई बोने के 40–45 दिन बाद समान रूप से छिड़क देना चाहिए।

**खरपतवार :–**

| | | | |
|---|---|---|---|
| | फलेरिसमाइनर जंगली जई : | | |
| | आइसोप्रोटेरान | 0.75 किलो | सक्रिय तत्व/है. |
| या | सल्फोसल्फ्यूरान | 25 ग्राम | –तदैव– |

**फसल सुरक्षा :–**

भूरी मिरवी और आल्टरनेरिया (अंगमारी रोग के लिए जिनेब) (डायथेन जेड–78) या डायथेन एम–45 नामक फफूंदीनाशक पदार्थ की 2 किग्रा. मात्रा 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर के हिसाब से छिड़काना चाहिए या प्रोपिकोनोजोल (टिल्ट–25 ई.सी.) की 500 मि.ली./है, मात्रा 800–1000 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें। पहला छिड़काव फरवरी के पहले हफ्ते में और इसके बाद छिड़काव 15 दिन के अन्दर करना चाहिए। वर्षा अधिक होने लगे तो छिड़काव के बीच का समय कम कर दें। यदि पत्ती खाने वाले कीड़े दिखाई दें तो प्रोफेनोफास 50: ई.सी. 1.5 एम.एल. से 2 एम.एल. की दर से स्प्रे करें या मोनोक्रोटोफास 2 एम.एल. से 2.5 एम.एल. प्रति ली. कर दर से स्प्रे करें। चूहों के नियंत्रण के लिए प्रत्येक बिल में जिंक फास्फाइड की 0.5 ग्राम की 1–2 गोली डाल देनी चाहिए। उसी खेत में फिर चूहे दिखाई दें तो कुमारिन मिलाकर बनाई गयी जहरीली गोलियां डालनी चाहिए। इन गोलियों को बनाने के लिए 1 भाग कुमारिन, 1 भाग धान या गेहूं या मक्का का आटा, 1 भाग शीरा और एक भाग सरसों का तेल मिलाया जाता है।

**कटाई :–** पकी फसल सूखने से पहले काट लेनी चाहिए ताकि दाने छिटक कर गिर न जायें।

नोट :– गेहूँ की अच्छी पैदावार के लिये निम्नलिखित बातों का होना अति आवश्यक है।

1. भूमि की सही किस्म।
2. मृदा में पर्याप्त नमी एवं सभी उर्वरकों की उपलब्धता।
3. पौधे की बढ़वार अनुसार सभी अवस्थाओं में सिंचाईयाँ (5–6 बार)।
4. समय पर खरपतवार, कीट एवं रोगों से बचाने/नियंत्रण के लिये उचित दवाओं का छिड़काव।
5. पुष्पावस्था में उचित तापमान होना एवं ओला, आंधी–बारिश का न होना।

निर्धारित मानकों के अतिक्रम पर केवल बीज मूल्य वापसी की प्रत्याभूति। **केवल कृषि प्रयोग हेतु।**

**नोट – प्रजाति PBW-343 एवं PBW-373, PBW-502 में तापमान भिन्नता के दृष्टिगत समयाकुल पुष्पावस्था देखी जा सकती है जो सामान्यतः अन्य प्रजाति नहीं हैं**